केस अध्ययन और राज्यों से सफलता की कहानियां

1. सफलता की कहानी: अनाथासागर टी एस सी

आंध्र प्रदेश के भेदक जिले के चिन्नाकदर मंडल का आनाथासागर, एन जी पी, का गौरवपूर्ण प्राप्तकर्ता है। यह टीएससी कार्यक्रम से पूर्व अन्य किसी गाँव की भांति था, जहाँ सभी खुले में शौच करते थे, जल से होने वाली बीमारियां बहुत प्रमुख थी। ग्राम पंचायत ने यह निर्णय लिया कि यदि वो आगे किसी भी व्यक्ति को खुले में शौच करते हुए पाएंगे तो उस पर पैनल्टी लगाई जाएगी।

सामुदायिक सदस्यों के मनोदशा में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से आईईसी गतिविधि शुरू की गई। जागरूकता सृजन हेतु पारंपरिक लोक मीडिया काला जठारा और घर-घर अभियान, दीवार लेखन, स्कूल में अभिभावक बैठक, रैलियां और अन्य कार्यक्रम शुरू की गई।

कार्यक्रम को बनाए रखने हेतु स्कूलों में शौचालय परिसर हेतु स्कूल स्वच्छता समिति, वाश समिति, पर्यावरण और स्वास्थ्य समितियां भी बनाई गई।

2. मध्य प्रदेश में इंदौर जिले के बचोडा गांव की सफलता की कहानी: बचोडा गांव में एक एफएलवाई के उदाहरण ने लोगों का जीतन बदला।

गांव बचौडा, जहाँ कृषि, अर्थव्यवस्था का एक मात्र श्रोत है, वो टीएससी हेतु निर्मल ग्राम पुरस्कार प्राप्त करने हेतु संपूर्ण मध्य प्रदेश में चर्चा में है। बहुत पुरानी बात नहीं है, केवल एक साल पहले ही बचोडा गांव, ग्रामीण भारत में अन्य किसी गाँव की भांति था, जहाँ संपूर्ण गाँव में खुले में शौच के कारण सब लोगो को हर स्थान पर गंदगी दिखती थी।

श्री मनीष भारद्वाज ने पेयजल एवं स्वच्छता की समस्या का समाधान करने के लिए पहल की। उन्होंने शौचालय निर्माण हेतु सामुदायिक सदस्यों द्वारा बहुत विरोध का सामना किया। सूचना प्रचारित की गई सामुदायिक सदस्यों के बीच बैठकों के माध्यम से, जागरूकता बढ़ाने के लिए पैम्पलेट बांटे गए। किंतु इस हेतु संपूर्ण गांव को मनाने में बहुत लंबा समय लगा।

किंतु चकाचक बदलाव देखा गया, और वो भी एक छोटे उदाहरण के कारण जो बैठकों के दौरान समुदाय के सदस्यों को दी गई। यह उदाहरण एक छोटे मक्खी का था कि वो किस प्रकार जाकर मल पर बैठ जाती है और फिर उड़कर हमारे भोजन पर बैठ जाती है। लोगों से यह विचारने को कहॉ गया कि अब वो खाना खाते समय क्या उपयोग करते हैं? इसका सरल सा उत्तर था, यहीं कि लोग खाने के साथ मल भी उपयोग करते हैं जब कि मक्खी के जरिए अंतरित हो जाती है जब वो खाद्य सामग्री पर बैठती

है। यह उदाहरण आंखें खोल देने वाला था, लोगों ने महसूस किया और शौचालय बनवाने पर सहमत हुए ताकि बचौडा गांव में खुले में शौच की प्रणाली पूर्णत: समाप्त हो सके।

कुछ लोगो को स्वच्छता के लिए पुलिस का काम दियागया, उनका दायित्व था कि वे किसी भी व्यक्ति को खुलों में शौच हेतु जाने न दें। शतप्रतिशत स्वच्छता लक्ष्य प्राप्त करने के उद्देश्य से जो लोग शौचालय नहीं बनवा रहे थे, उन्हें दण्डित किया गया, कुछ समय तक उन्हें राशन की दुकान से अन्न भी नहीं दिया गया और इस कारण से कुछ पेंशनभागियों की पेंशनें भी रोक दी गई।

शौचालय निर्माण का कार्य पूरा होने के बाद अगला लक्ष्य था सामुदायिक सदस्यों का स्वास्थ्य और साफ-सफाई महिलाओं को साफ-सफाई का महत्व समझाया गया, जो स्वयं को गंदगी में रखती थीं, उन्हें ठंडे पानी से नहलाकर दण्ड दिया गया। गांव को साफ रखने के उद्देश्य से, सड़कें चौड़ी की गई, सड़क किनारे कूड़ेदान लगाए गए।

3. आंध्र प्रदेश में पश्चिमी गोदावरी जिले के जुबलापलेम की सफलता की कहानी

जुव्वालापालम, आंध्र प्रदेश के प० गोदावरी जिले में एक छोटा गांव है जहाँ 3700 की आबादी है, यह बंगाल की खाड़ी के तट के निकट स्थित है। इतने दशकों से पेय जल सुविधा का अभाव, खुले में शौच के कारण खराब स्वच्छता स्थिति और अपशिष्ट विषय, के प्रणाली के अभाव में ग्रामीणों का स्वास्थ्य अत्यधिक रूप से प्रभावित हुआ है।